Sunni Aalimon Ke Makke Madeene Ke 17 Waqiaat (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत की किताब "आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात" की एक क़िस्त़

हफ़्तावार रिसाला : 356
Weekly Booklet : 356

सुन्नी आ़लिमों के मक्के मदीने के 17 वाक़िआ़त

सफ़ह़ात 21

- इमाम अह़मद रज़ा और दीदारे मुस्त़फ़ा 03
- मौलाना सरदार अह़मद की ख़जूरे मदीना से मह़ब्बत 10
- सगे मदीना की नाज़ बरदारी 09
- क़ुत़्बे मदीना और ग़रीब ज़ाइरे मदीना 19

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **सुन्नी आ़लिमों के मक्के मदीने के 17 वाक़िआ़त**

सिने त़बाअ़त : ज़िल क़ा'दा **1445** हि., मई **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **"सुन्नी आ़लिमों के मक्के मदीने के 17 वाक़िआ़त"**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِرج ۵۱ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नी आ़लिमों के मक्के मदीने के 17 वाक़िआ़त[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : **"सुन्नी आ़लिमों के मक्के मदीने के 17 वाक़िआ़त"** पढ़ या सुन ले उसे बार बार ह़ज व दीदारे मदीना से मुशर्रफ़ फ़रमां और उस को मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ो मुह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।

(معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿1﴾ आ'ला ह़ज़रत के वालिदे गिरामी को ख़ुसूसी बुलावा मिला

वालिदे आ'ला ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मुफ़्तिये बे बदल और आ़शिक़े रसूल थे, "अपना जाना और है उन का बुलाना और है" के मिस्दाक़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को मदीनए मुनव्वरा की ह़ाज़िरी के लिये ख़ुसूसी बुलावा मिला और वोह यूं कि ख़्वाब में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़लब फ़रमाया : बा वुजूद बीमारी और कमज़ोरी

1... येह मज़्मून किताब "आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात" सफ़्ह़ा 144 ता 165 से लिया गया है ।

के चन्द अह़बाब के हमराह रख़्ते सफ़र बांधा और सूए ह़रम रवाना हो गए, कुछ अ़क़ीदतमन्दों ने अ़लालत (या'नी बीमारी) के पेशे नज़र मश्वरा दिया कि येह सफ़र आइन्दा साल पर मुल्तवी कर दीजिये। फ़रमाया : ''मदीनए त़य्यिबा के क़स्द से क़दम दरवाज़े से बाहर रखूं फिर चाहे रूह़ उसी वक़्त परवाज़ कर जाए।'' मह़बूबे करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने फ़िदाई के जज़्बए मह़ब्बत की लाज रख ली और ख़्वाब ही में एक प्याले में दवा इनायत फ़रमाई जिस के पीने से इस क़दर इफ़ाक़ा हो गया कि मनासिके ह़ज की अदाएगी में रुकावट न रही। (سُرورالقلوب ''د'')

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

बुलाते हैं उसी को जिस की बिगड़ी येह बनाते हैं
कमर बंधना दियारे त़यबा को खुलना है क़िस्मत का

(ज़ौक़े ना'त, स. 37)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ अस्ले मुराद ह़ाज़िरी उस पाक दर की है

आ़शिके़ माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ अपने दूसरे **सफ़रे ह़ज** में मनासिके ह़ज अदा करने के बा'द शदीद अ़लील (या'नी सख़्त बीमार) हो गए मगर आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इम्तिदादे मरज़ (या'नी बीमारी के त़वील हो जाने) में मुझे ज़ियादा फ़िक्र ह़ाज़िरिये सरकारे आ'ज़म (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की थी। जब बुख़ार को इम्तिदाद (या'नी तूल) पकड़ता देखा, मैं ने उसी ह़ालत में क़स्दे ह़ाज़िरी किया, येह उ़लमा

(رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم) मानेअ़ हुए (या'नी रोकने लगे)। अव्वल तो येह फ़रमाया कि : "ह़ालत तो तुम्हारी येह है और सफ़र त़वील !" मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर सच पूछिये तो ह़ाज़िरी का अस्ल मक़्सूद ज़ियारते त़य्यिबा है, दोनों बार इसी निय्यत से घर से चला, مَعَاذَاللّٰہ अगर येह न हो तो **ह़ज** का लुत़्फ़ नहीं।" उन्हों ने फिर इस्रार और मेरी ह़ालत का इश्आ़र किया (या'नी मेरी ह़ालत याद दिलाई)। मैं ने ह़दीस पढ़ी : "مَنْ حَجَّ وَلَمْ یَزُرْنِیْ فَقَدْ جَفَانِیْ" जिस ने ह़ज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर जफ़ा की। (کشف الخفاء، 2/218، حدیث:2458) फ़रमाया : तुम एक बार तो ज़ियारत कर चुके हो। मैं ने कहा : मेरे नज़्दीक ह़दीस का येह मत़लब नहीं कि उ़म्र में कितने ही ह़ज करे ज़ियारत एक बार काफ़ी है बल्कि हर ह़ज के साथ ज़ियारत ज़रूर है, अब आप दुआ़ फ़रमाइये कि मैं सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंच लूं। रौज़ए अक़्दस पर एक निगाह पड़ जाए अगर्चे उसी वक़्त दम निकल जाए। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 201)

काश ! गुम्बदे ख़ज़रा पर निगाह पड़ते ही ख़ा के ग़श मैं गिर जाता फिर तड़प के मर जाता

(वसाइले बख़्शिश, स. 410)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ इमाम अह़मद रज़ा और दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे और मुतबह़्ह़र आ़लिमे दीन थे, कमो बेश 100 उ़लूमो फ़ुनून पर दस्तरस रखते थे, उ़लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को चौदहवीं सदी का **मुजद्दिद** कहा, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने दीन को बात़िल की आमेज़िश से पाक कर के इह़याए सुन्नत के लिये ज़बरदस्त काम किया, साथ ही लोगों के दिलों में जो शम्

इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रोशनी मध्धम पड़ती जा रही थी उसे अज़ सरे नौ फ़रोज़ां किया, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बेशक फ़नाफ़िर्रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ थे, दूसरी बार जब ह़ज्जे बैतुल्लाह की सआ़दत मिली और मदीनए पाक की ह़ाज़िरी नसीब हुई तो बेदारी में ज़ियारत की ह़सरत लिये मुवाजहा शरीफ़ में पूरी रात ह़ाज़िर रह कर दुरूदे पाक का विर्द करते रहे, पहली रात क़िस्मत में येह सआ़दत न थी, दूसरी रात आ गई। मुवाजहा शरीफ़ में ह़ाज़िर हुए और दर्दे फ़िराक़ से बेताब हो कर एक ना'तिया ग़ज़ल पेश की जिस के चन्द अश्आ़र येह हैं :

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं — तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं
हर चरागे़ मज़ार पर कुदसी — कैसे परवाना वार फिरते हैं
उस गली का गदा हूं मैं जिस में — मांगते ताजदार फिरते हैं
फूल क्या देखूं मेरी आंखों में — दश्ते त़यबा के ख़ार फिरते हैं
कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा — तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं

(मक़्त़अ़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अज़ राहे तवाज़ोअ़ अपने आप को "कुत्ता" फ़रमाया है लेकिन आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत अदबन यहां "मंगता" "शैदा" वग़ैरा लिखते और बोलते हैं, इन्हीं की पैरवी में अदबन इस जगह "शैदा" लिख दिया है और ह़क़ीक़त भी येही है) आप बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में दुरूदो सलाम पेश करते रहे, आख़िरे कार इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं और क़िस्मत अंगड़ाई ले कर उठ बैठी, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने आ़शिक़े ज़ार पर ख़ास करम फ़रमाया, निक़ाबे रुख़ उठ गया, ख़ुश नसीब आ़शिक़ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ऐन बेदारी की ह़ालत में चश्माने सर (या'नी सर की आंखों) से दीदार किया।

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

शरबते दीद ने और आग लगा दी दिल में तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से तह में रखा है इसे दिल ने गुमाने न दिया
सजदा करता जो मुझे इस की इजाज़त होती क्या करूं इज़्न मुझे इस का ख़ुदा ने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 71)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम सब को चाहिये कि हम भी अपने दिल में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत बढ़ाएं और क़ल्ब में दीदार की तमन्ना परवान चढ़ाएं । اِنْ شَآءَاللّٰہ कभी तो हमारी भी क़िस्मत चमक उठेगी । कभी तो वोह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم करम फ़रमा ही देंगे ।

सुना है आप हर आ़शिक़ के घर तशरीफ़ लाते हैं
कभी मेरे भी घर में हो चराग़ां या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ मश्हूर आ़शिक़े रसूल
अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी का अन्दाज़े अदब

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म, ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिस कोटल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा जब मैं **ह़ज** करने गया तो मदीनए मुनव्वरा की ह़ाज़िरी में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के दीदार से मुशर्रफ़ होते वक़्त मैं ने "बाबुस्सलाम" के क़रीब और गुम्बदे ख़ज़रा के सामने एक सफ़ेद रीश और इन्तिहाई नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग को देखा जो क़ब्रे अन्वर की जानिब मुंह कर के दो ज़ानू बैठे कुछ पढ़ रहे थे ।

मा'लूम करने पर पता चला कि येह मश्हूरो मा'रूफ़ आ़लिमे दीन और ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं। मैं उन की वजाहत और चेहरे की नूरानिय्यत देख कर बहुत मुतअस्सिर हुवा और उन के क़रीब जा कर बैठ गया और उन से गुफ़्त्गू की कोशिश की, वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह न हुए तो मैं ने उन से कहा : मैं हिन्दूस्तान से आया हूं और आप की किताबें "حُجَّةُ اللهِ عَلَى الْعَالَمِين" और "जवाहिरुल बिह़ार" वग़ैरा मैं ने पढ़ी हैं जिन से मेरे दिल में आप की बड़ी अ़क़ीदत हैं। उन्हों ने येह बात सुन कर मेरी त़रफ़ महब्बत से हाथ बढ़ाया और मुसाफ़ह़ा फ़रमाया। मैं ने उन से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप क़ब्रे अन्वर से इतनी दूर क्यूं बैठे हैं ? तो रो पड़े और फ़रमाने लगे : "मैं इस लाइक़ नहीं हूं कि क़रीब जा सकूं।" इस के बा'द मैं अकसर उन की जाए क़ियाम पर ह़ाज़िर होता रहा और उन से "सनदे ह़दीस" भी ह़ासिल की। सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ नब्हानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अहलियए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا को 84 मरतबा नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल हुवा है। (अन्वारे क़ुत़्बे मदीना, स. 195 मुलख़्ख़सन) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

उन के दियार में तू कैसे चले फिरेगा ? *अ़त्तार तेरी जुरअत तू जाएगा मदीना !!*

(वसाइले बख़्शिश, स. 320)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ पीर मेहर अ़ली शाह को ज़ियारते मक्कीने गुम्बदे ख़ज़रा ब मक़ाम वादिये ह़मरा

ताजदारे गोलड़ा ह़ज़रते पीर मेहर अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **मदीनए आ़लिया** के सफ़र में ब मुक़ाम **वादिये ह़मरा** डाकूओं के ह़म्ले की परेशानी की वज्ह से मजबूरन इ़शा की सुन्नतें मुझ से रह गईं, मौलवी मुह़म्मद ग़ाज़ी, मद्रसए सौलतिया में शग़्ले ता'लीमो तदरीस छोड़ कर हुस्ने ज़न की बिना पर ब ग़रज़े ख़िदमत इस मुक़द्दस सफ़र में मेरे शरीक हुए थे। इन रुफ़क़ा की मइ़य्यत में मैं क़ाफ़िले के एक त़रफ़ सो गया, क्या देखता हूं कि सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सियाह अ़रबी जुब्बा ज़ेबे तन फ़रमाए तशरीफ़ ला कर अपने जमाले बा कमाल से मुझे नई ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाते हैं, ऐसा मा'लूम हुवा कि मैं एक मस्जिद में ब ह़ालते मुराक़बा दो ज़ानू बैठा हूं, आं हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़रीब तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया कि आले रसूल को सुन्नत तर्क नहीं करना चाहिये। मैं ने इस ह़ालत में आं जनाब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दो पिन्डलियों को जो रेशम से भी ज़ियादा लत़ीफ़ थीं अपने दोनों हाथों से मज़्बूत़ पकड़ कर नाला व फ़ुग़ां करते (या'नी रोते बिलकते) हुए, اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله कहना शुरूअ़ किया और आ़लमे मदहोशी में रोते हुए अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर कौन हैं? जवाब में वोही इर्शाद हुवा कि आले रसूल को सुन्नत तर्क नहीं करना चाहिये। तीन बार येही सुवालो जवाब होते रहे। तीसरी बार मेरे दिल में डाला गया कि जब आप निदाए या रसूलल्लाह से मन्अ़ नहीं फ़रमा रहे तो ज़ाहिर है कि ख़ुद आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, अगर कोई और बुज़ुर्ग होते तो इस कलिमे से मन्अ़ फ़रमाते, उस हुस्नो जमाले बा कमाल के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहूं ! उस ज़ौक़ो मस्ती व फ़ैज़ाने करम के बयान से ज़बान आ़जिज़

है और तह़रीर लंग (लाचार) अलबत्ता बादा ख़्वाराने इश्क़ो मह़ब्बत (या'नी शराबे मह़ब्बत पीने वालों) के ह़ल्क़ में इन अब्यात (या'नी अश्आ़र) से एक जुरआ़ (या'नी घूंट) और उस नाफ़ए मुश्क (मुश्क की थैली) से एक नफ़्ह़ा (ख़ुश गवार महक) डालना मुनासिब मा'लूम होता है। (मेहरे मुनीर स. 131 ता 132)

ह़ज़रते पीर मेहर अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मज़कूरा वाक़िए़ का अपने मश्हूर कलाम में भी इशारा फ़रमाया है। उस के चन्द अश्आ़र मुलाह़ज़ा हों :

अज सिक मितरां दी वधेरी ऐ — *क्यूं दिलड़ी उदास घनेरी ऐ !*
लूं लूं विच शौक़ चिंगेरी ऐ — *अज नैनां लाइयां क्यूं झड़ियां*
اَلطَّیفُ سَرٰی مِنْ طَلْعَتِہٖ — وَالشَّذْوُ بَدٰی مِنْ وَّفْرَتِہٖ
فَسَکَرْتُ ھُنَا مِنْ نَظْرَتِہٖ — *नैना दियां फ़ौजां सर चढ़ियां*
मुख चन्द बदर शा'शानी ऐ — *मथे चमके लाट नूरानी ऐ*
काली ज़ुल्फ़ ते अख मस्तानी ऐ — *मख़्मूर अखीं हिन मद भरियां*
दो अब्रो क़ोस मिसाले दिसन — *जबीं तूं नोके मिज़ा दे तीर छुटन*
लबां सुर्ख़ आखां कि ला'ले यमन — *चिट्टे दन्द मोती दियां हिन लड़ियां*
इस सूरत नूं मैं जान आखां — *जानान कि जाने जहान आखां*
सच आखां ते रब्ब दी शान आखां — *जिस शान तूं शानां सब बनियां*
ला हो मुख तूं मुख़त्तत़ बुर्दे यमन — *मन भा नूरी झलक दिखाओ सजन*
औहा मिठियां गालीं अलाओ मिठन — *जो ह़मरा वादी सन करियां*
سُبْحٰنَ اللہ! مَا اَجْمَلَکَ — مَا اَحْسَنَکَ مَا اَکْمَلَکَ
किथ्थे मेहरे अ़ली किथ्थे तेरी सना — *मुश्ताक़[1] अखीं किथ्थे जा लड़ियां*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

1... ह़ज़रते पीर मेहर अ़ली शाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बत़ौरे आ़जिज़ी यहां लफ़्ज़ "गुस्ताख़" लिखा है। (मेहरे मुनीर, स. 500) मगर ह़ज़रत का अदब करते हुए अकसर सना ख़्वां जिस त़रह़ पढ़ते हैं उसी त़रह़ मैं ने लिख दिया है।

﴾6﴿ सगे मदीना की नाज़ बरदारी

मश्हूर आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह मोह़द्दिस अ़ली पूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा गए तो उन के किसी मुरीद ने मदीनए मुनव्वरा के एक कुत्ते को इत्तिफ़ाक़न ढेला मार दिया जिस की चोट से कुत्ता चीख़ा, ह़ज़रत शाह साह़िब से किसी ने कह दिया कि आप के फ़ुलां मुरीद ने मदीने शरीफ़ के एक कुत्ते को मारा है। येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बेचैन हो गए और अपने मुरीदों को हुक्म दिया कि फ़ौरन उस कुत्ते को तलाश कर के यहां लाओ। चुनान्चे कुत्ता लाया गया, शाह साह़िब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उठे और रोते हुए उस कुत्ते से मुख़ातिब हो कर कहने लगे : ऐ दियारे ह़बीब के रहने वाले ! लिल्लाह मेरे मुरीद की इस लग़्ज़िश को मुआ़फ़ कर दे। फिर भुना हुवा गोश्त और दूध मंगवाया और उसे खिलाया पिलाया, फिर उस से कहा : जमाअ़त अ़ली तुझ से मुआ़फ़ी चाहता है, ख़ुदारा इसे मुआ़फ़ कर देना। (सुन्नी उ़लमा की ह़िकायात, स. 211 मुलख़्ख़सन) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दिल के टुकड़े नज़्रे ह़ाज़िर लाए हैं ऐ सगाने कूचए दिलदार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 84)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾7﴿ आक़ा बुलाएं तो उड़ कर जाना चाहिये

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिस कोटल्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के जिगर गोशे ह़ज़रते मौलाना अबुन्नूर मुह़म्मद बशीर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **ह़ज़रते**

अमीरे मिल्लत पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह मुह़द्दिस अ़ली पूरी (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने कई **ह़ज** किये, तक़रीबन हर साल मदीनए मुनव्वरा का इ़श्क़ उन्हें इस शरफ़ से मुशर्रफ़ फ़रमाता। एक साल आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ब ज़रीअ़ए हवाई जहाज़ सफ़रे ह़ज की तरकीब बनाई। वालिदे मुअ़ज़्ज़म (फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिस कोटल्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) को पता चला तो मुझे साथ ले कर अ़ली पूर शरीफ़ पहुंचे, ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, तो आप मदीनए मुनव्वरा ही का ज़िक्रे ख़ैर कर रहे थे, वालिदे गिरामी को देख कर बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया : मैं सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में फिर ह़ाज़िरी देने जा रहा हूं, वालिदे माजिद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने दर्याफ़्त किया : हुज़ूर ! इस बार सुना है आप हवाई जहाज़ से जा रहे हैं ? ह़ज़रत ने जवाब दिया : मौलवी साह़िब ! यार बुलाए तो उड़ कर पहुंचना चाहिये। येह जुम्ला कुछ ऐसे अन्दाज़ में फ़रमाया कि ख़ुद भी आबदीदा हो गए और ह़ाज़िरीन पर भी एक कैफ़ त़ारी हो गया। (सुन्नी उ़लमा की ह़िकायात, स. 45) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तक़्दीर में ख़ुदाया अ़त़्त़ार के मदीना   लिख दे फ़क़त़ मदीना सरकार का मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 302)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

《8》 मौलाना सरदार अह़मद की खजूरे मदीना से मह़ब्बत

मह़बूब के शहर से मह़ब्बत सच्चे आ़शिक़ की अ़लामत है लिहाज़ा अ़ज़ीम आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते मुह़द्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मदीनतुल मुनव्वरा से बहुत मह़ब्बत करते थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की

महफ़िल में अकसर दियारे महबूब का तज़किरा होता रहता था। अगर कोई ज़ाइरे मदीना आप की ख़िदमत में हाज़िर होता तो उस से मदीनतुल मुनव्वरा के हालात पूछते, मदीनए पाक के रिहाइशी अहले सुन्नत व जमाअ़त की ख़ैरिय्यत दर्याफ़्त फ़रमाते और अगर कोई तबर्रुक पेश करता तो बड़ी ख़ुशी से क़बूल फ़रमाते। एक मरतबा एक हाजी साहिब ने मदीनए त़य्यिबा की खजूरें पेश कीं, उस वक़्त दौरए ह़दीस जारी था, ख़ुरमाए मदीना (या'नी मदीने की खजूरें) हाज़िरीन त़लबा में तक़्सीम फ़रमाईं और एक खजूर अपनी दाढ़ों में दबा कर फ़रमाने लगे : "ख़ुरमाए मदीना (या'नी खजूरे मदीना) अपने मुंह में रख ली है, जब तक घुल कर अन्दर जाती रहेगी, ईमान ताज़ा होता रहेगा।" (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 155, माख़ूज़न)

खजूरे मदीना से क्यूं हो न उल्फ़त कि है इस को आक़ा के कूचे से निस्बत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ मदीने में अपने बाल व नाख़ुन दफ़्न फ़रमाए

ह़ज़रते मुह़द्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़क़ीर ने मदीनतुर्रसूल से वापसी के वक़्त अपने कुछ बाल और नाख़ुन मदीना शरीफ़ में दफ़्न कर दिये और रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह!** मदीनए पाक में मरना तो मेरे इख़्तियार में नहीं अलबत्ता अपने जिस्म के चन्द अज्ज़ा दफ़्न कर के जा रहा हूं कि हम ग़रीबों के लिये येही ग़नीमत है।" (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 155, माख़ूज़न)

जानो दिल छोड़ कर येह कह के चला हूं आ'ज़म आ रहा हूं मेरा सामान मदीने में रहे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ अब कुछ भी नहीं हम को मदीने के सिवा याद

मौलाना क़ाज़ी मज़्हरुल हक़, ज़ाहिदान, बग़दाद शरीफ़, मदीनतुल मुनव्वरा और दूसरे मक़ामाते मुक़द्दसा की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो कर ह़ज़रते मुह़द्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, जब क़ाज़ी साह़िब का तआ़रुफ़ कराया गया (और अ़र्ज़ की गई कि येह मदीने की ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ हो कर आए हैं) तो क़ाज़ी साह़िब का हाथ थाम लिया, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आंखों से आसूं बहने लगे, अगर्चे त़बीअ़त काफ़ी ना दुरुस्त थी, बीमारी में इज़ाफ़ा हो चुका था, लेकिन इस के बा वुजूद आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उठ कर बैठ गए और क़ाज़ी साह़िब से मदीनतुल मुनव्वरा की बातें पूछने लगे, मदीनए पाक में रहने वाले अह़बाबे अहले सुन्नत व जमाअ़त की ख़ैरिय्यत दर्याफ़्त फ़रमाई, मदीना शरीफ़ की गलियों की याद आई, गुम्बदे ख़ज़रा का नूरानी मन्ज़र निगाहों में फिरने लगा, मुक़द्दस जालियों के जल्वे दिल में उतरने लगे, रौज़ए अक़दस का वक़ार दिलों पर छाने लगा, तसव्वुराते दियारे ह़बीबे ख़ुदा की नूरानी वादियों में गुम होने लगे और तमाम मह़फ़िल की कैफ़िय्यत येह हो गई कि

ग़ैरों की जफ़ा याद न अपनों की वफ़ा याद अब कुछ भी नहीं हम को मदीने के सिवा याद

(ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 155 ता 156)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾11﴿ मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे। आप के बारे में येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को आप के दामाद ह़कीम सय्यिद या'क़ूब अ़ली साह़िब (मर्ह़ूम) ने सुनाया था : ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़ज्जे बैतुल्लाह पर तशरीफ़ ले गए। जब वोह मदीनए मुनव्वरा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार में ह़ाज़िर हुए तो सुनहरी जालियों के क़रीब देखा कि ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी मज्मअ़ में मौजूद हैं। मुलाक़ात की हिम्मत न हुई क्यूं कि बा अदब लोग वहां बातचीत नहीं करते। सलातो सलाम से फ़ारिग़ होने के बा'द बाहर तलाश किया मगर ज़ियारत न हुई। ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत, शैख़ुल अ़रबे वल अ़जम क़ुत़्बे मदीना सय्यिदी व मौलाई ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दरबारे फ़ैज़ आसार पर ह़ाज़िर हुए कि अ़रबो अ़जम के उ़लमाए ह़क़ और मशाइख़े किराम ह़रमैने त़य्यिबैन की ह़ाज़िरी के दौरान ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ियारत के लिये ज़रूर ह़ाज़िर होते थे। वहां भी ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ कोई मा'लूमात ह़ासिल न हुईं। ह़ैरान थे कि सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अगर तशरीफ़ लाए हैं तो कहां गए ! दरीं असना मुरादाबाद (हिन्द) से तार ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के आस्ताने अ़र्श निशान पर आया कि फ़ुलां दिन फ़ुलां वक़्त ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन साह़िब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मुरादाबाद में विसाल हो गया है। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने जब वक़्त मिलाया तो वोही वक़्त था जिस वक़्त सुन्हरी जालियों के क़रीब सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नज़र आए थे, फ़ौरन समझ

गए कि जैसे ही इन्तिक़ाल फ़रमाया, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में सलातो सलाम के लिये ह़ाज़िर हो गए।

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾12﴿ ऐ मदीने के दर्द तेरी जगह मेरे दिल में है

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 1390 हि. में ह़ज्जो ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल की, इस ज़िम्न में सफ़रे मदीना का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा में फिसल कर गिर गया। दाहिने हाथ की कलाई की हड्डी टूट गई, दर्द ज़ियादा हुवा तो मैं ने उसे बोसा दे कर कहा : ऐ मदीने के दर्द तेरी जगह मेरे दिल में है तू तो मुझे यार के दरवाज़े से मिला है।

तेरा दर्द मेरा दरमां तेरा ग़म मेरी ख़ुशी है मुझे दर्द देने वाले तेरी बन्दा परवरी है

दर्द तो उसी वक़्त से ग़ाइब हो गया मगर हाथ काम नहीं करता था, 17 दिन के बा'द मुस्तशफ़ा मुल्क या'नी शाही अस्पताल में एक्सरे लिया तो हड्डी के दो टुकड़े आए जिन में क़दरे फ़ासिला है मगर हम ने इ़लाज नहीं कराया, फिर आहिस्ता आहिस्ता हाथ काम भी करने लगा, मदीनए मुनव्वरा के उस अस्पताल के डॉक्टर मुह़म्मद इस्माईल ने कहा कि येह ख़ास करिश्मा हुवा है कि येह हाथ तिब्बी लिह़ाज़ से ह़रकत भी नहीं कर सकता, वोह एक्सरे मेरे पास है, हड्डी अब तक टूटी हुई है, इस टूटे हाथ से तफ़्सीर लिख रहा हूं, मैं ने अपने इस टूटे हुए हाथ का इ़लाज सिर्फ़ येह किया कि आस्तानए आ़लिया पर खड़े हो कर अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! मेरा हाथ टूट गया है, ऐ

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक़ की टूटी पिन्डली जोड़ने वाले ! ऐ मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा का टूटा बाज़ू जोड़ देने वाले मेरा टूटा हाथ जोड़ दो। (तफ़्सीरे नईमी, 9/388) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

चांद को तोड़ के फिर जोड़ने वाले आ जा हम भी टूटी हुई तक़्दीर लिये फिरते हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ जन्नतुल बक़ीअ़ में लाशों के तबादले

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज में मेरे साथ एक पंजाबी बुज़ुर्ग थे जिन का नाम था सूफ़ी मुह़म्मद हुसैन, वोह मुझ से फ़रमाने लगे कि एक बार मैं शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुहाजिर इलाहाबादी की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि ह़दीस शरीफ़ में तो आता है कि "हमारा मदीना भट्टी है जैसे कि भट्टी लोहे के मैल को निकाल देती है ऐसे ही ज़मीने मदीना ना अहल को अपने से निकाल देती है।" ह़ालां कि मुर्तद और मुनाफ़िक़ भी मदीनए पाक में मर कर यहां ही दफ़्न हो जाते हैं फिर इस ह़दीस का मत़लब क्या है ? शाह साह़िब ने मुझे कान पकड़ कर निकलवा दिया ! मैं ह़ैरान था कि मुझे किस क़ुसूर में निकाला गया ! रात को ख़्वाब में देखा कि मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान या'नी जन्नतुल बक़ीअ़ में खुदाई हो रही है। और ऊंटों पर बाहर से लाशें आ रही हैं और यहां से बाहर जा रही हैं। मैं उन लोगों के पास गया और पूछा कि क्या कर रहे हो ? वोह बोले कि "जो ना अहल यहां दफ़्न हो गए हैं उन को बाहर पहुंचा रहे हैं और उ़श्शाक़े मदीना की उन लाशों को जो और जगह दफ़्न हो गई हैं यहां ला रहे हैं।" दूसरे दिन फिर शाह साह़िब की ख़िदमत में ह़ाज़िर

हुवा, आप ने मुझे देखते ही फ़रमाया कि अब समझे ! ह़दीस का मत़लब येह है और कल तुम ने अग़यार (या'नी ग़ैरों) में असरार (या'नी भेद) पूछे थे जिस की तुम्हें सज़ा दी गई थी। (तफ़्सीरे नईमी, 1/766)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

बक़ीए पाक में अ़त्तार दफ़्न हो जाए बराए ग़ौसो रज़ा अज़ पए ज़िया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 95)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ ग़ज़ालिये ज़मां और मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां पर सुल्त़ाने दो जहां صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एह़सां

एक मरतबा ह़ज़रते शैख़ अ़लाउद्दीन अल बिक्री अल मदनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते शैख़ अ़ली हुसैन मदनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के हां मदीनए त़य्यिबा में मह़फ़िले मीलाद मुन्अ़क़िद हुई जो कि पुर ज़ौक़ मह़फ़िल थी और अन्वारे नबवी ख़ूब चमके। मह़फ़िल के इख़्तिताम पर मीरे मह़फ़िल ने तबर्रुकन जलेबी तक़्सीम की और फ़रमाया : आज रात मीलाद की जलेबी खाने वाले को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की اِنْ شَآءَاللّٰہ ज़ियारत होगी, कल अ़लस सुब्ह़ बा'द नमाज़े फ़ज्र मस्जिदे नबवी शरीफ़ में हर एक अपनी कैफ़िय्यते दीदार सुनाए। ह़ाजी ग़ुलाम हुसैन मदनी मर्ह़ूम का बयान है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मैं ने भी वोह जलेबी खाई थी, मुझे सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा, मैं ने इस ह़ाल में ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, कि दाहिनी जानिब बग़ल में (ग़ज़ालिये ज़मां राज़िये दौरां) ह़ज़रते

क़िब्ला सय्यिद अह़मद सईद काज़िमी शाह साह़िब (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) हैं और दूसरे हाथ में (ह़ज़रते) **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) का हाथ पकड़ रखा है। (अन्वारे क़ुत़्बे मदीना, स. 53) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दीदार की भीक कब बटेगी   मंगता है उम्मीदवार आक़ा

(ज़ौक़े ना'त, स. 66)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾15﴿ अ़ल्लामा काज़िमी साह़िब और ख़ारे मदीना

ग़ज़ालिये ज़मां ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद सईद काज़िमी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरा की पहली ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर पांव में एक ख़ार (या'नी कांटा) चुभ गया, जिस से सख़्त तकलीफ़ हो रही थी, निकालने लगा तो आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़ारे मदीना से मह़ब्बत याद आ गई तो मैं वहीं रुक गया और पांव से कांटा न निकाला कई दिन के बा'द ख़ुद ब ख़ुद दर्द रुक गया।" (अन्वारे क़ुत़्बे मदीना, स. 53) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

उन की ह़रम के ख़ार कशीदा हैं किस लिये   आंखों में आएं सर पे रहें दिल में घर करें

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 98)

ख़ारे सह़राए नबी ! पांव से क्या काम तुझे   आ मेरी जान मेरे दिल में है रस्ता तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 25)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾16﴿ बा'दे विसाल आ'ला ह़ज़रत की दरबारे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िरी

कुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी मदनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ (सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की वफ़ात के बा'द का वाक़िआ़ बयान करते हुए) फ़रमाते हैं : एक मरतबा मुवाजह शरीफ़ में ह़ाज़िरी देने के लिये मस्जिदे नबवी शरीफ़ के "बाबुस्सलाम" से अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ मुवाजह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के खड़े हैं और सलाम पढ़ रहे हैं। मैं क़रीब गया तो आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गए। मैं मुवाजह शरीफ़ की त़रफ़ चला गया और सलातो सलाम का नज़राना पेश कर के अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! मुझे मेरे शैख़ (इमाम अह़मद रज़ा ख़ान) की ज़ियारत से मह़रूम न रखा जाए।" सय्यिदी कुत़्बे मदीना رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मैं ने मुवाजह शरीफ़ की पाइंती (या'नी क़दमैने शरीफ़ैन) की त़रफ़ देखा तो आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बैठे दिखाई दिये, मैं ने दौड़ कर आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की क़दम बोसी की और ज़ियारत से फ़ैज़याब हुवा। (अन्वारे कुत़्बे मदीना, स. 238, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ग़मे मुस्त़फ़ा जिस के सीने में है कहीं भी रहे वोह मदीने में है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ कुत़्बे मदीना और ग़रीब ज़ाइरे मदीना

ह़ज़रते ह़कीम मुह़म्मद मूसा अमरतसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिन दिनों मैं मदीनए मुनव्वरा में ह़ाज़िर था, सय्यिदी कुत़्बे मदीना ह़ज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में भी ह़ाज़िरी होती। खाने के वक़्त एक मफ़्लूकुल ह़ाल शख़्स आता और खाना खा कर चला जाता। मैं ने एक दिन दिल में सोचा कि येह शख़्स ख़्वाह म ख़्वाह खाने के वक़्त आ जाता है और ह़ज़रत को तकलीफ़ देता है ! उसी दिन जब मह़फ़िल बर्ख़ास्त हुई। सय्यिदी कुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि ह़कीम मुह़म्मद मूसा ! मुझ से मिल कर जाना। मैं ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो फ़रमाया : ह़कीम साह़िब ! येह जो ग़रीबुल ह़ाल शख़्स हर रोज़ खाना खाने के लिये आता है, येह एक मिल में मा'मूली मुलाज़िम है, इसे हर साल शहनशाहे बह़रो बर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत नसीब होती है, बड़ा ख़ुश बख़्त है और मदीनए मुनव्वरा का ज़ाइर है। मैं इस लिये इस को खाना खिलाता हूं। (अन्वारे कुत़्बे मदीना, स. 277 मुलख़्ख़सन) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

थका मान्दा वोह है जो पांव अपने तोड़ कर बैठा

वोही पहुंचा हुवा ठहरा जो पहुंचा कूए जानां में

(ज़ौक़े ना'त, स. 191)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه/ ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। مَاشَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़ओं से ह़िस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दावते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से ख़ुद भी पढ़ें और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शोबा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)